University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

1857 के संग्राम का सफलता एवं प्रभाव : एक अध्ययन

टिंकू कुमार

बेलिहियॉ, तरियानी, शिवहर

सार संक्षेप

1857 का संग्राम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अमिट स्थान रखता है। 1857 के संग्राम की शुरूआत 10 मई, 1857 ई0 को मेरठ से हुई। धीरे–धीरे इसका फैलाव कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानेां तक हो गया। दरअसल ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत आगमन के दो प्रमुख उद्देश्य थे। प्रथम– साम्राज्य बढ़ाना और दूसरा व्यापारिक शोषण करना। भारत आगमन के कुछ ही वर्षों बाद कंपनी अपने उद्देश्यों को पूरा करने में लग गई। फूट डालो शासन करो की नीति पर चलते हुए उसने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हर हथकंडे अपनाने लगे जो एक साम्राज्यवादी राष्ट्र का गुण होता है। भारतीय शासक अंग्रेजों की चाल समझ नहीं सके और धीरे–धीरे ईस्ट इंडिया कंपनी के गिरफ्त में आते चले गये। ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी थी, इसलिए लोग यह नहीं समझ सके कि वह शासन जमा लेगी। यही कारण था कि कंपनी के प्रतिनिधि जिस तरह अपना काम कर सके, उसी तरह ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि न कर पाते। एक लम्बे अर्से के बाद भारतीय यह समझ सके कि उन पर अप्रत्यक्ष रूप से कंपनी का शासन कायम हो चुका है। 1837 का संघर्ष कई मामलों में खास रहा है। इस महान संघर्ष के दो प्रमुख तात्कालिक कारण थे। पहला उत्तर–पश्चिमी प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर थामसन द्वारा चलाई गई नीति थी। दूसरा डलहौजी की वह नीति थी जिसके अनुसार वह एक के बाद एक दूसरी भारतीय रियासत को ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल करता गया। इन दो प्रमुख तत्कालिक कारणों के अलावे 1857 के संग्राम के मुख्य कारण राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक थे। भले ही यह क्रांति सफल नहीं हो सकी फिर भी इसने ईस्ट इंडिया कंपनी की नीव हिला कर रख दी। भारत की शासन व्यवस्था सीधे ब्रिटीश सरकार के अधीन हो गई। भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक बात जो साकारात्मक रही वह यह कि भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का प्रादुर्भाव हो चुका था।

मुख्य शब्दः– संग्राम, क्रांति, कारण, सफलता, प्रभाव ।

परिचयः– 1857 का संग्राम ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ी और अहम घटना थी। इस क्रांति की शुरूआत 10 मई 1857 ई0 को मेरठ से हुई जो धीरे–धीरे कई क्षेत्र जैसे–कानपुर, बरेली, झाँसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानों पर फैल गई। क्रांति की शुरूआत तो एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई, लेकिन समय के साथ उसका स्वरूप बदलकर ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में बदल गया जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा गया।

1857 के विद्रोह की अस्पष्ट कहानी से दो तथ्य रूप से ज्ञात होते हैं–

(1) पहला यह कि उस समय भारत में हिन्दू और मुसलमानों में बहुत एकता थी और

(2) दूसरा यह कि लोग मुगल हुकुमत के प्रति बहुत वफादार थे।

यह आन्दोलन लगभग दो वर्षों तक चला इस दौरान दोनों ओर के लोग बहुत सराहनीय कार्य भी किये और काले कारनामें भी।

(1) प्रोफेसर सेन 1857 की क्रांति घटनाओ को बड़े परिप्रेक्ष्य में देखते हुए यह तर्क देते हैं कि विद्रोह तथा क्रांतियाँ मुख्य रूप से एक अल्पसंख्यक वर्ग का ही कार्य होता है, जिसमें जनता की सहानुभूति होती भी है और नहीं भी होती।[1] जैसे की अमेरीकी स्वतंत्रता संग्राम अथवा फ्रांसीसी क्रांति में हुआ। इस तर्क को

आगे बढ़ाते हुए वह इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि जिस विद्रोह का धार्मिक संघर्ष के रूप में आरंभ हुआ उसका अन्त स्वतंत्रता संग्राम के रूप में हुआ।

(2) **संग्राम के कारण**– ऐंग्लो इण्डियन इतिहासकारों ने सैनिक असन्तोषों तथा चर्बी वाले कार्तूसो को ही 1857 के महान विद्रोह का सबसे मुख्य कारण बताया। साथ ही इस क्रांति के और भी कारण बने जैसे राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक और आर्थिक कारण।

(3) **राजनैतिक कारण**– इस तर्क का अंतिम रूप डलहौजी के काल में सामने आया जिसने नैतिक और राजनैतिक आचार की सभी सीमाओं को छिन्न–भिन्न कर के व्यापगत के सिद्धांत (doctrine of lapse) को गढ़ा। उससे धीरे–धीरे देशी राजे सशंकित होकर विद्रोह के कारणों के लिए एकत्र होने लगे। इसके अलावे अंग्रेजों ने भारतीयों को शासन से अलग रखने की नीति को अपनाया।

डलहौजी की विलय की नीति ने सभी राजाओं को छिन्न–भिन्न कर व्यापगत के सिद्धांत को गढ़ा।

भारतीय राजाओं ने यह मानने लगे थे कि सभी रियासतों का अस्तित्व खतरे में हैं और उन सबका विलय होना केवल समय का प्रश्न है।

(4) मालसेन ने ठीक कहा है किवे और अन्य ऊँचे पदाधिकारियों के कथनों और लेखों ने एक प्रकार का अविश्वास का वातावरण उत्पन्न कर दिया था और भारतीयों को यह प्रतीत होने लगा कि अंग्रेज मेमन के रूप में भेड़िये की भूमिका निभा रहे हैं।

(5) यह भी तर्क दिया गया है कि एक और राजनैतिक कारण भारत में ब्रिटिश शासन का स्वरूप अनुपस्थित प्रभुसत्ता के रूप में थी और अंग्रेजों के विरोध के लिए भारतीय मन पर बहुत प्रभाव पड़ा।

सामाजिक कारण– सभी विजेता जातियों की भाँति अंग्रेज शासक विजित लोगों के प्रति बहुत रूखे तथा असंतुष्ट थे। इसके अतिरिक्त वे जातिभेद की भावना से भी प्रेरित थे। वे भारतीय को हेय दृष्टि से देखते थे और हिन्दुओं को बर्बर और मुसलमानों को कट्टरपंथी, निर्दयी और बेईमान समझते थे।

पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव– पाश्चात्य् शिक्षा ने समाज की मूल विशेषताओं को समाप्त कर दिया। अभार प्रदर्शन, कर्तव्यपालन, परस्पर सहयोग आदि भारतीय समाज की परम्परागत विशेषता थी, किन्तु ब्रितानी शिक्षा ने इसे नष्ट कर दिया।

शारीरिक तथा राजनैतिक अन्याय सहन करना कई बार सम्भव हो सकता है परन्तु धार्मिक उत्पीड़न सहना बहुत कठिन हाता है। अंग्रेजों का एक उद्देश्य भारतीयों को ईसाई बनाना भी था।

(6) **मेजर एडवर्ड्ज (Major Edwards)** ने भी स्पष्ट रूप से कहा था भारत पर हमारे अधिकार का अंतिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है।

अतः भारतीयों को यह विश्वास होता जा रहा था कि अंग्रेज उन्हें ईसाई बनाने की येाजना बना रहे हैं।

आर्थिक कारण :–

(1) व्यापार का विनाश :– ब्रितानियों ने भारतीयों का जमकर आर्थिक शोषण किया था। ब्रितानियों ने भारत में लूट–मार करके धन प्राप्त किया तथा उसे इंग्लैंड भेज दिया। ब्रितानियों ने भारत से कच्चा माल इंग्लैण्ड भेजा तथा वहाँ से मशीनों द्वारा माल तैयार होकर भारत आने लगा। इसके कारण भारतीयों के उद्योग धंधे नष्ट होने लगे। इस प्रकार ब्रितानियों के भारतीय व्यापार पर अपना नियंत्रण स्थापित कर भारतीयों का आर्थिक शोषण किया।

पंडित नेहरू ने लिखा है, एक ग्रामीण उद्योग के बाद दूसरा ग्रामीण उद्योग नष्ट होता गया और भारत ब्रिटेन का आर्थिक उपांग बन गया।

किसानों का शोषणः– ब्रितानियों ने कृषकों की दशा सुधार करने के नाम पर स्थाई बंदोबस्त, रैय्यतवाड़ी एवं महालवाड़ी प्रथा लागू की, किंतु

इस सभी प्रथाओं में किसानों का शोषण किया गया तथा उनसे बहुत अधिक लगान वसूल किया गया इससे किसानों की हालात बिगड़ती गई।

अकाल :– अंग्रेजों के शासन काल में बार–बार अकाल पड़े जिसने किसानों की स्थिति और खराब हो गई। जिससे किसानों के साथ–साथ आम जनता की भी स्थिति पर बड़ा असर परा।

प्रभाव :– सन् 1857 का विद्रोह यद्यपि पूर्णतया दमन हो गया फिर भी इसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य को मूल से हिला दिया।

(7) लार्ड क्रोमर ने कहा था ''काश कि अंग्रेज की युवा पीढ़ी भारतीय विद्रोह के इतिहास को पढ़े, ध्यान दें, सीखे और इसका मनन करें। इसमें बहुत से पाठ और चेतावनियाँ निहित है। भारत पर नियंत्रण की विधियां यद्यपि परिपक्व हो चूकी थीं। उनको पुनः स्थापित किया गया और उसके उपरान्त समान रूप से प्रत्येक स्थान पर लगाई गई।

इस विद्रोह के लिए मुख्यतः भारतीय सेना ही उत्तरदायी थी। इसका पूर्णतया पुनर्गठन किया गया और इसका गठन विभाजन और प्रतितोलन की नीति पर किया गया।

अतः 1857 के विद्रोह ने एक युग का अन्त कर दिया और नवीन युग के बीज बोए। अंग्रेजों के लिए साम्राज्यवादी युग का भय सदा के लिए समाप्त हो गया और अंग्रेजी साम्राज्य के लिए चुनौती उस प्रगतिशील भारत से ही आई जो उन्नसवी शताब्दी के उत्तरवादी, अंग्रेजों और जॉन स्टूअर्टमिन के दर्शन पर चला था।

परिणाम– यद्यपि 1857 की क्रांति सफल नहीं हो सकी तथापि इसके दूरगामी प्रभाव पड़े जिसने भारत की राजनीतिक व्यवस्था को काफी प्रभावित किया। कंपनी के शासन का खात्मा, भारत सरकार अधिनियम 1858 के तहत भारत को सीधे ब्रिटीश राजशाही के नाम पर शासित किया गया। 1857 की क्रांति के पश्चात् ब्रिटीश सरकार को मजबूरन इस अधिनियम को पारित करना पड़ा। 1857 की क्रांति के परिणामें को संक्षिप्तरूप में हम निम्न रूप में बयाँ कर सकते हैं–

(i) ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की समाप्ति
(ii) सत्ता का हस्तांतरण
(iii) भारत सरकार अधिनियम 1858 पारित किया गया।
(iv) भारत सचिव (The Secretary of State for India) के पद का सृजन
(v) अंग्रेजों द्वारा सेना एवं सैन्य सामग्रियों पर एकाधिकार
(vi) आम जनता के लिए अस्त्र–शस्त्र रखने पर प्रतिबन्ध
(vii) देशी राजाओं के प्रभाव में वृद्धि
(viii) पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था का प्रचलन
(ix) भारतीयों के आत्मबल में वृद्धि
(x) भारतीयों में राष्ट्रभावना का विकास
(xi) भारतीयों में राजनीतिक जागृति
(xii) नये आंदोलनों के लिए प्रेरणा
(xiii) स्वतंत्रता आंदोलन को नयी दृष्टि
(xiv) भारतीयों को शासन में भाग लेने के लिए अवसर की प्राप्ति
(xv) भारत का संवैधानिक विकास

स्पष्ट है कि 1857 की क्रांति के परिणाम का तात्कालिक एवं दूरगामी प्रभाव पड़ा जिससे भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक व्यवस्था काफी प्रभावित हुई।

निष्कर्ष:– 1857 का संग्राम भारतीय इतिहास की ऐसी प्रेरणादायक घटना है जिसने ब्रिटीश साम्राज्य की नींव हिला दिया। अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे किंतु उसने धीरे–धीरे अपना प्रभाव जमाना शुरू किया। फूट डालो राज करो उसकी मुख्य नीति थी। ईस्ट इंडिया कंकपनी के बढ़ते प्रभाव एवं भारतीयों पर किये जा रहे अत्याचार के कारण 10 मई 1857 को मेरठ से एक सैन्य क्रांति की शुरूआत हुई जो कालांतर में ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में तब्दील हो गया। इस महान क्रांति के प्रमुख कारणों में

राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सैन्य असंतोष प्रमुख कारणों में शूमार किया जाता है। हालांकि यह क्रांति अपने उद्देश्यों में सफल नही हो सका तथापि इसने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की तस्वीर बदल कर रख दी। भारत से कंपनी शासन की समाप्ति 1858 का भारत सरकार अधिनियम, भारत सचिव के पद का सृजन आदि अनेक परिवर्तन हुए। इन सब में सबसे प्रमुख परिवर्तन भारतीय सत्ता का हस्तांतरण था। भारत की शासन व्यवस्था अब सीधे ब्रिटीश सरकार के अधीन हो गई।

भले ही यह क्रांति सफल नहीं हो सकी किंतु इसने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास अवश्य कर दिया। कालांतर में 1857 की क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष की पटकथा लिखने में सफल अवश्य हुई।

सन्दर्भ–ग्रंथ सूचीः–

1. सेन सुरेन्द्र नाथः अठारह सौ संतावन प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ0सं0–2
2. वहीं, पृ0सं0–2
3. ग्रोवर वी0एल0, मेहता अलका, यशपाल आधुनिक भारत का इतिहास, एस0 चन्द्र एण्ड कंपनी लि0, रामनगर, नई दिल्ली, पृ0सं0–183
4. वहीं, पृ0सं0–187
5. वहीं, पृ0सं0–188
6. वही, पृ0सं0–189
7. वहीं, पृ0सं0–190
8. वहीं, पृ0सं0–195
9. www.Indiaholidays.com.
10. वहीं, पृ0सं0–196